6

छन्द

संस्कृत साहित्य में पद्य निर्माण में छन्द का विशेष महत्त्व है। छन्द की परिभाषा दी गई है - **यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः** अर्थात् अक्षर अथवा वर्ण के परिमाण को छन्द कहते हैं। इसका अभिप्राय है कि वर्णों की सुनिश्चित संख्या तथा क्रमबद्ध प्रयोग को छन्द कहते हैं। संस्कृत साहित्य में छन्दों का प्रयोग वैदिक काल से होता आ रहा है। छन्द को वेद का पैर कहा गया है - **छन्दः पादौ तु वेदस्य** अर्थात् जिस प्रकार चरण के बिना कोई प्राणी गमन क्रिया नहीं कर सकता है, उसी प्रकार छन्द-ज्ञान के अभाव में वेद मन्त्रों का पाठ नहीं हो सकता है।

वृत्त का मुख्य प्रयोजन है - गेयता और लालित्य का आधान। छन्दों के माध्यम से पद्यो में गेयता आती है, जिससे उनका, लालित्य संवर्धन होता है। गेय पदों को सुनने से इन्द्रियों को तृप्ति के साथ-साथ उसके अभिप्राय का ग्रहण भी सरलता पूर्वक होता है। छन्दों के प्रयोग से पद्यों का शीघ्रता से स्मरण भी हो जाता है। इस प्रकार पाठक और श्रोता दोनों की दृष्टि से वृत्त-प्रयोग का विशेष महत्त्व है।

छन्द दो प्रकार के होते हैं - वार्णिक और मात्रिक।

वर्णों की गणना के आधार पर बने छन्द वार्णिक होते हैं। इन्हें ही जाति कहते हैं। इसका प्रमुख छन्द आर्या है। लघु और गुरु मात्राओं के आधार पर बने छन्द मात्रिक होते हैं। लौकिक संस्कृत में मात्रिक छन्दों का अधिक प्रयोग हुआ है। जबकि वार्णिक छन्द वैदिक साहित्य में अधिक प्रयुक्त हुए हैं।

छन्द-शास्त्र की मान्यता के अनुसार प्रत्येक पद्य के चार खण्ड होते हैं, जिन्हें पाद या चरण कहते हैं। जिन छन्दों के चारों चरणों में बराबर-बराबर

अक्षर होते हैं, उसको समवृत्त कहते हैं। जिन छन्दों के प्रथम-तृतीय एवं द्वितीय-चतुर्थ चरण में वर्णों की मात्रा बराबर-बराबर होती है; उसको अर्धसमवृत्त कहते हैं। इसी प्रकार जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न-भिन्न हो, उसको विषम वृत्त कहते हैं।

इस प्रकार वर्णों की संख्या के आधार पर तीन प्रकार के छन्द होते हैं :-

1. समवृत्त -

तथा समक्षं दहता मनोभवं - 12
पिनाकिना भग्नमनोरथा सती। - 12
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती - 12
प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता।। - 12

कुमारसम्भव 5.1

2. अर्धसमवृत्त -

वहति जलमियं पिनष्टि गन्धान् - 12
इयमियमुद्ग्रथते स्रजो विचित्राः। - 13
मुसलमिदमियं च पातकाले - 12
मुहुरनुयाति कलेन हुंकृतेन।। - 13

मुद्राराक्षस 1.3

3. विषमवृत्त -

अत्र वासवस्य वचनेन - 10
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम्। - 10
क्लान्तिरहितमभिराधयितुं - 11
विधिवत्तपांसि विदधे धनञ्जयः।। - 13

किरातार्जुनीय 12.1

इनमें समवृत्त की संख्या सर्वाधिक है। अर्धसमवृत्त में अपरवक्त्र, उपचित्र, पुष्पिताग्रा, वियोगिनी, वेगवती, हरिणप्लुता आदि प्रमुख छन्द हैं। विषम वृत्तों की संख्या बहुत कम है।

वर्ण-व्यवस्था - सम्पूर्ण छन्द-शास्त्र वर्णों पर आश्रित है। छन्द की दृष्टि से वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

1. लघु और 2. गुरु। ह्रस्व स्वर वाले वर्ण लघु होते हैं तथा दीर्घ स्वर वाले वर्ण गुरु। अ, इ, उ, ऋ और लृ ह्रस्व स्वर हैं जबकि आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ और औ दीर्घ स्वर।

छन्द शास्त्र के नियमों के अनुसार कुछ परिस्थितियों में ह्रस्व स्वर को गुरु माना जाता है -

1. अनुस्वार युक्त या विसर्गयुक्त या संयुक्त व्यञ्जन के पहले का वर्ण गुरु हो जाता है।
2. पाद का अन्तिम वर्ण लघु होने पर भी आवश्यकतानुसार गुरु मान लिया जाता है।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गो च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पदान्तगोऽपिवा॥

3. गुरु वर्ण के लिए 'ऽ' तथा लघु वर्ण के लिए '।' चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

गण-व्यवस्था - छन्द-शास्त्र में तीन वर्णों का समूह गण कहलाता है। वहाँ गुरु एवं लघु वर्णों की व्यवस्था के अनुसार आठ गण माने गये हैं -

यगण	-	। ऽ ऽ
मगण	-	ऽ ऽ ऽ
तगण	-	ऽ ऽ ।
रगण	-	ऽ । ऽ
जगण	-	। ऽ ।
भगण	-	ऽ । ।
नगण	-	। । ।
सगण	-	। । ऽ

इन्हीं आठ गणों एवं लघु तथा दीर्घ वर्णों के संयोजन से छन्द का निर्धारण होता है।

इनमें भगण के आदि में गुरु, जगण के मध्य में गुरु तथा सगण के अन्त में गुरु होता है। यगण के आदि में लघु, रगण के मध्य में लघु तथा तगण के अन्त में लघु होता है। मगण में सभी वर्ण गुरु तथा नगण में सभी वर्ण लघु होते हैं।

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम्।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम्॥
मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तः गुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः॥

अनुष्टुप् (श्लोक)

श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

इस छन्द के प्रत्येक चरणं में पाँचवा अक्षर लघु और छठा अक्षर गुरु होता है। सातवाँ अक्षर पहले और तीसरे चरण में गुरु होता है किन्तु दूसरे और चौथे चरण में लघु होता है। इसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं।

1 2 3 4 5 6 7 8
वागार्थाविव सम्पृक्तौ = 8
। S S

1 2 3 4 5 6 7 8
वागार्थप्रतिपत्तये = 8
। S।

1 2 3 4 5 6 7 8
जगतः पितरौ वन्दे = 8
S S

1 2 3 4 5 6 7 8
पार्वतीपरमेश्वरौ = 8 रघुवंश 1.1
। S ।

कतिपय अन्य उदाहरण

1. कृष्णसारे ददच्चक्षुस त्वयि चाधिज्यकार्मुके।
मृगानुसारिणं साक्षात् पश्यामीव पिनाकिनम्।। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.6
2. अनुकारिणि पूर्वेषां युक्तरूपमिदं त्वयि।
आपन्नाभयसत्रेषु दीक्षिताः खलु पौरवाः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 2.16
3. का कथा बाणसंधाने ज्याशब्देनैव दूरतः।
हंकारेणैव धनुषः स हि विघ्नानपोहति।। अभिज्ञानशाकुन्तल 3.1

4. ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पुरुमवाप्नुहि।। अभिज्ञानशाकुन्तल 4.7

5. दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।। अभिज्ञानशाकुन्तल 4.4

आर्या

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीये ऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थे पञ्चदश सार्या।

जिसके प्रथम तथा तृतीय चरण में 12, द्वितीय चरण में अठारह तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं, उसको आर्या छन्द कहते हैं। (इसमें हृस्व स्वर को एक मात्रा तथा दीर्घ स्वर को दो मात्रा माना जाता है)

अधरः किसलयरागः - 12
कोमलविटपानुकारिणौ बाहू। - 18
कुसुममिव लोभनीयं - 12
यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।। - 15 अभिज्ञानशाकुन्तल 1.21

कतिपय अन्य उदाहरण

1. अनुयास्यन्मुनितनयां सहसा विनयेन वारितप्रसरः।
स्थानादनुच्चलन्नपि गत्वेव पुनः प्रतिनिवृत्तः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.29

2. आ परितोषाद् विदुषां न साधुमन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.2

3. उद्गलितदर्भ कवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 4.12

4. कः पौरवे वसुमतीं शासितारि दुर्विनीतानाम्
अयमाचरत्यविनयं मुग्धासु तपस्विकन्यासु।। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.25

इन्द्रवज्रा

स्यादिन्द्र वज्राय दितौ जगौ गः।

इन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक चरण में क्रम से दो तगण (तौ) एक जगण (ज) और दो गुरु वर्ण (गौ) होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर हाते हैं।

अर्थो हि कन्या परकीय एव

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

तगण तगण जगण

तामाद्य संप्रेष्य परिग्रहितुः।

ऽ ऽ । ऽ ऽ। । । ऽ ऽ ऽ

तगण तगण जगण

जातो मैमायं विशदः प्रकामं

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

तगण तगण जगण

प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

तगण तगण जगण

अभिज्ञानशाकुन्तल 4.22

कतिपय अन्य उदाहरण

1. भानुः सकृद्युक्ततुरङ्ग एव
रात्रिं दिवं गन्धवहः प्रयाति।
शेषः सदैवाहितभूमिभारः
षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 5.4

2. मित्राणि शत्रुत्वमुपानयन्ती
मित्रत्वमर्थस्य वशाच्च शत्रून्।
नीतिर्नयत्यस्मृतपूर्ववृत्तं
जन्मान्तरं जीवत एव पुंसः।। मुद्राराक्षस 5.8

3. जामातृयज्ञेन वयं निरुद्धा -
स्त्वं बाल एवासि नवं च राज्यम्।
युक्तः प्रजानामुनरञ्जने स्या
स्तस्माद्यशो यत् परमं धनं वः।। उत्तररामचरित 1.1

4. अस्मिन्नगस्त्यप्रमुखाः प्रदेशे
भूयांस उद्गीथविदो वसन्ति।

तेभ्योऽधिगन्तु निगमान्तविद्यां
वाल्मीकिपार्श्वादिह पर्यटामि।। उत्तररामचरित 2.3

उपेन्द्रावज्रा

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।

जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।

यथा -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
। ऽ। ऽ ऽ । । ऽ । ऽ।/ऽ
जगण तगण जगण गु. गु.
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
। ऽ। ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ।/ऽ
जगण तगण जगण गु. गु.
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ।/ऽ
जगण तगण जगण गु.गु.
त्वेमव सर्वं मम देवदेवः।।
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ ।ऽ ऽ
जगण तगण जगण गु.गु.

कतिपय अन्य उदाहरण

1. उपेत्य नागेन्द्रतुरंगतीर्णे तामारुणिं दारुणकर्मदक्षम्।
विकीर्णबाणोग्रतरङ्गभङ्गे महार्णवाभे युधि नाशयामि।।

स्वप्नवासवदत्तम् 5.13

2. उपेन्द्रवज्रादिमणिच्छटाभिर्विभूषणानां छुरितं वपुस्ते।
स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानं सुरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम्।।

आप्टे कोश पृ. 1189

3. भवन्नखाः कुन्ददलश्रियो ये नमन्ति लक्ष्मीस्तनलेखनेऽपि।
उपेन्द्र! वज्राधिककर्कशत्वं कथं गतास्ते रिपुदारणायाम्? छन्दशास्त्र पृ. 119

द्रुतविलम्बित

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।

प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, दो भगण और रगण वाला छन्द द्रुतविलम्बित कहलाता है। इसमें प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते हैं।

उदाहरण -

अभिमुखे मयि संहृतमीक्षणं

। । ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

नगण भगण भगण रगण

हसितमन्यनिमित्तकृतोदयम्।

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

नगण भगण भगण रगण

विनयवारितवृत्तिरस्तया

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

नगण भगण भगण रगण

न विवृतो मदनो न च संवृतः।।

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

नगण भगण भगण रगण

अभिज्ञानशाकुन्तल 2.11

कतिपय अन्य उदाहरण

1. इदमनन्यपरायणमन्यथा हृदयसंनिहिते हृदयं मम।
   यदि समर्थयसे मदिरेक्षणे मदनबाणहतोऽस्मि हतः पुनः।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 3.16

2. यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया।
   अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम्।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 5.27

3. मुनिसुताप्रणयस्मृतिरोधिना मम च मुक्तमिदं तमसा मनः।।
   मनसिजेन सखे प्रहरिष्यता धनुषि चूतशरश्च निवेशितः।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 6.8

4. सुखपरस्य हरेरुभयैः कृतं त्रिदिवमुद्धृतदानवकण्टकम्।
तव शैरधुना नतपर्वभिः पुरुषकेसरिणश्च पुरा नखैः।।
अभिज्ञानशाकुन्तल 7.3

उपजाति

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः

जिस छन्द में इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के चरणों का मिश्रण होता है, वह उपजाति छन्द कहलाता है। इसके चौदह भेद हैं। इसमें 11 अक्षर होते हैं।

उदा॰ -

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा इन्द्रवज्रा
S S I S S I I S I S S
तगण तगण जगण

हिमालयो नाम नगाधिराजः। उपेन्द्रवज्रा
I I S S S I I S I S S
जगण तगण जगण

पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य इन्द्रवज्रा
S S I S S I I S I S S
तगण तगण जगण

स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।। उपेन्द्रवज्रा कुमारसम्भव 1.1
I I S S S I I S I S S
जगण तगण जगण

कतिपय अन्य उदाहरण

1. शमप्रधानेषु तपोवनेषु
गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।
स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्ता -
स्तदन्यतेजोऽभिभवाद्वमन्ति।। अभिज्ञानशाकुन्तल 2.7

2. प्रजाः प्रजाः स्वा इव तन्त्रयित्वा
निषेवतेऽशान्तमना विविक्तम्।
यूथानि संचार्य रविप्रतप्तः

शीतं दिवा स्थानमिव द्विपेन्द्रः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 5.5

3. आ जन्मनः शाठ्यमशिक्षितो
यस्तस्याप्रमाणं वचनं जनस्य।
परातिसंधानमधीयते यै
र्विद्येति ते सन्तु किलाप्तवाचः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 5.25

4. संरोपितेऽप्यात्मनि धर्मपत्नी
व्यक्ता मया नाम कुलप्रतिष्ठा।
कल्पिष्यमाणा महते फलाय
वसुंधरा काल इवाप्तबीजा।। अभिज्ञानशाकुन्तल 6.24

5. अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण
स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम्।
कां निर्वृतिं चेतसि तस्य कुर्या-
द्यस्यायमङ्कात्कृतिनः प्ररूढः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 7.19

वसन्ततिलका

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण, जगण और अन्त में दो गुरु होते हैं। यह चौदह अक्षरों वाला समवृत्त है।

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरौषधीना

S S I S I I I S I I S I S S

तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

माविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः।

S S I S I I I S I I S I S S

तगण भगण जगण जगण

तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां ।

S S I S I I I I S I I S I S S

तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।।

ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

अभिज्ञानशाकुन्तल 4.2

कतिपय अन्य उदाहरण

1. अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे
   दृष्टिं न नन्दयन्ति संस्मरणीयशोभा।
   इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य
   दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुः सहानि।। -अभिज्ञानशाकुन्तल 4.3
2. यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
   तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
   श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति
   सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते।। अभिज्ञानशाकुन्तल 4.14
3. उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिं
   वाष्पं कुरु स्थिरतया विहतानुबन्धम्।
   अस्मिन्नलक्षितनतोन्नत भूमिभागे
   मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति।। अभिज्ञानशाकुन्तल 4.15
4. भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी
   दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य
   भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं
   शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्।। अभिज्ञानशाकुन्तल 4.20

मालिनी

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।

मालिनी वृत्त के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण, यगण तथा यगण और आठवें और सातवें अक्षर के बाद यति होती है। अर्थात् इसके प्रत्येक चरण में दो नगण, एक मगण तथा दो यगण होता है। प्रथम एवं तृतीय चरण में आठवें और द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में सातवें अक्षर पर विराम या यति होती है।

उदाहरण –

सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
नगण नगण मगण यगण यगण
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
नगण नगण मगण यगण
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ। ऽ ऽ
नगण नगण मगण यगण यगण
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।
। । । । । ।ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
नगण नगण मगण यगण यगण

अभिज्ञानशाकुन्तल 1.20

कतिपय अन्य उदाहरण

1. तव कुसुमशरत्वं शीतरश्मित्वमिन्दो –
   र्द्वयमिदमयथार्थं दृश्यते मद्विधेषु।
   विसृजति हिमगर्भैरग्निमिन्दुर्मयूखै
   स्त्वमपि कुसुमबाणान्वज्रसारीकरोषि।। अभिज्ञानशाकुन्तल 3.3
2. स हि भृशमभियुक्तो यद्युपेयाद्विनाशं
   ननु वृषल वियुक्तस्तादृशेनासि पुंसा।
   अथ तव बलमुख्यान्धातयेत्सापि पीडा
   वनगज इव तस्मात्सोऽभ्युपायैर्विनेयः।। मुद्राराक्षस 3.25
3. इदमुपहितसूक्ष्मग्रन्थिना स्कन्धदेशे
   स्तनयुगपरिणाहाच्छादिना वल्कलेन।
   वपुरभिनवमस्याः पुष्यति स्वां न शोभां
   कुसुममिव पिनद्धं पाण्डुपत्रोदरेण।। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.19

4. स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यते लोकहेतोः
प्रतिदिनमथवा ते वृत्तिरेवंविधैव
अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं
शमयति परितापं छायया संश्रितानाम्।। अभिज्ञानशाकुन्तल 5.7

मन्दाक्रान्ता

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।

मन्द्राकान्ता के प्रत्येक चरण में एक-एक मगण, भगण, नगण, दो तगण और अन्त में दो गुरु अक्षर होते हैं।

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
S S S S । । । । । S S । S S । S S
म भ न त त गु गु
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
S S S S । । । । । S S । S S । S S
म भ न त त गु गु
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
S S S S । । । । । S S । S S । S S
म भ न त त गु गु
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।
S S S S । । । । । S S । S S । S S
म भ न त त गु गु

कतिपय अन्य उदाहरण

1. कुल्याम्भोभिः पवनचपलैः शाखिनो धौतमूला
भिन्नो रागः किसलयरुचामाज्यधूमोद्गमेन।
एते चार्वागुपवनभुविच्छिन्नदर्भाङ्कुराणां
नष्टाशङ्का हरिणशिशवो मन्दमन्दं चरन्ति। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.15

2. तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः
पादाकृष्टव्रततिवलयासङ्गसंजातपाशः।
मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथो
धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.33

3. अध्याक्रान्ता वसतिरमुनाप्याश्रमे सर्वभोग्ये
रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं संचिनोति।
अस्यापि द्यां स्पृशति वशिनश्चारणद्वन्द्वगीतः
पुण्यःशब्दो मुनिरिति मुहुः केवलं राजपूर्वः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 2.14

4. नैतच्चित्रं यदयमुदधिश्यामसीमां धरित्री-
मेकः कृत्स्नां नगरपरिघप्रांशुबाहुर्भुनक्ति।
आशंसन्ते सुरयुवतयो बद्धवैरा हि दैत्यै -
रस्याधिज्ये धनुषि विजयं पौरुहूते च वज्रे।। अभिज्ञानशाकुन्तल 2.15

5. मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगर्वः।
गर्भाधानकणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः मेघदूत 10

शिखरिणी

रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी।

शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और अन्त में एक लघु और एक गुरु होता है। प्रत्येक चरण में छठें तथा सतरहवें अक्षर पर यति होती है।

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै
। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
य म न स भ ल. ग.

रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
य म न स भ ल. ग.

अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽऽ । । । ऽ
भ म न स भ ल. ग.

न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।
। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
य म न स भ ल. ग.

अभिज्ञानशाकुन्तल 2.10

कतिपय अन्य उदाहरण

1. यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलतां
यदर्धे विच्छिन्नं भवति कृतसंधानमिव तत्।
प्रकृत्या यद्वक्रं तदपि समरेखं नयनयो -
र्न मे दूरे किञ्चित्क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्।। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.9

2. चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः।
करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं
वयम् तत्त्वान्वेषान्मधुकर हतास्त्वं खलु कृती।। अभिज्ञानशाकुन्तल 1.24

3. पृथिव्यां किं दग्धाः प्रथितकुलजा भूमिपतयः
पतिं पापे मौर्यं यदसि कुलहीनं वृतवती।
प्रकृत्या वा काशप्रभवकुसुमप्रान्तचपला
पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुण विमुखी।। मुद्राराक्षस 2.7

4. महाभागः कामं नरपतिरभिन्नस्थितिरहो
न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि भजते।
तथापीदं शश्वत्परिचितविविक्तेन मनसा
जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव।। अभिज्ञानशाकुन्तल 5.10

5. इतः प्रत्यादेशात्स्वजनमनुगन्तुं व्यवसिता
मुहुस्तिष्ठेत्युच्चैर्वदति गुरुशिष्ये गुरुसमे।
पुनर्दृष्टिं वाष्पप्रसरकलुषामर्पितवती
मयि क्रूरे यत्तत्सविषमिव शल्यं दहति माम्।। अभिज्ञानशाकुन्तल 6.9

शार्दूलविक्रीडित

सूर्याश्वैर्यदि मःसजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।

शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और अन्त में एक गुरु अक्षर होता है। प्रत्येक चरण में बारहवें तथा उनीसवें अक्षर पर यति होती है।

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या,
S S S I I S I S I I I S S S I S S I S
म स ज स त त गु.
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
S S S I I S I S I I I S S S I S S I S
म स ज स त त गु.
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
S S S I I S I S I I I S S S I S S I S
म स ज स त त गु.
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।
S S S I I S I S I I I S I S I I S I S
म स ज स त त गु.

अभिज्ञानशाकुन्तल 4.9

कतिपय अन्य उदाहरण

1. नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः
प्रस्निग्धाः क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः।
विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगाः।।
स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किताः।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 1.14

2. स्रस्तांसावतिमात्रलोहिततलौ बाहू धरोत्क्षेपणा -
दद्यापि स्तनवेपथुं जनयति श्वासः प्रमाणाधिकः
स्रस्तं कर्णशिरीषरोधि वदने घर्माम्भसां जालकं
बन्धे स्रंसिनि चैकहस्तयमिताः पर्याकुला मूर्धजाः।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 1.30

3. क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं
निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभोगोत्थितै -
र्दत्तान्याभरणानि तत्किसलयोद्भेद प्रतिद्वन्द्विभिः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 4.5

4. यास्यत्यद्य शुकन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।। अभिज्ञानशाकुन्तल 4.6

5. प्राकारं परितः शरासनधरैः क्षिपं परिक्रम्यतां
द्वारेषु द्विरदैः प्रतिद्विपघटाभेदक्षमैः स्थीयताम्।
त्यक्त्वा मृत्युभयं प्रहर्तुमनसः शत्रोर्बले दुर्बले
ते निर्यान्तु मया सहैकमनसो येषामभिष्टं यशः।। मुद्राराक्षस 2.13

स्रग्धरा

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

स्रग्धरा वृत के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण, यगण होते हैं। इसमें प्रत्येक सात वर्णों के बाद यति होती है।

उदाहरण -

ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः,
S S S S I S S I I I I I I S S I S S I S S
म र भ न य य य
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्।
S S S S I S S I I I I I I S S I S S I S S
म र भ न य य य
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
S S S S I S S I I I I I I S S I S S I S S
म र भ न य य य
पश्योदग्रप्लुतत्वाद्वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति।
S S S S I S S I I I I I I S S I S S I S I/S
म र भ न य य य

अभिज्ञानशाकुन्तल 1.7

कतिपय अन्य उदाहरण

1. या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।।

यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 1.1

2. श्यामीकृत्याननेन्दूनरियुवतिदिशां सन्ततैः शोकधूमैः
कामं मन्त्रिद्रुमेभ्यो नयपवनहृतं मोहभस्म प्रकीर्य।
दग्ध्वा संभ्रान्तपौरद्विजगणरहितान्नन्दवंशप्ररोहान्
दाह्याभावान्न खेदाज्ज्वलन इव वने शाम्यति क्रोधवह्निः।।

मुद्राराक्षस 1.11

3. कौतूलश्चित्रवर्मा मलयनरपितः सिंहनादो नृसिंहः
काश्मीरः पुष्कराक्षः क्षतरिपुमहिमा सैन्धवः सिन्धुषेणः।
मेघाख्यः पञ्चमोऽस्मिन्पृथुतुरगबलः पारसीकाधिराजो
नामान्येषां लिखामि ध्रुवमहमधुना चित्रगुप्तः प्रमार्ष्टुः।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 1.20

4. यत्रैषा मेघनीला चरति गजघटा राक्षसस्तत्रयायाद्
एतत्पारिप्लुवाम्भः प्लुति तुरगबलं वार्यतां राक्षसेन।
पत्तीनां राक्षसोऽन्तं नयतु बलमिति प्रेष्यन्मह्यमाज्ञाम्
अज्ञासीः प्रतियोगात्स्थितमिव नगरे राक्षसानां सहस्रम्।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 2.14

5. सत्त्वोत्कर्षस्य धात्रा निधय इव कृताः केऽपि कस्यापि हेतोः
जेतारः स्वेन धाम्ना मदसलिलमुचां नागयूथेश्वराणाम्।
द्रंष्ट्राभंगं मृगाणामधिपतय इव व्यक्तमानावलेपा
नाज्ञाभंगं सहन्ते नृवर नृपतयस्त्वादृशाः सार्वभौमाः।। मुद्राराक्षस 3.22